भूमिका

पृष्ठभूमि:

संत शब्द 'सन् + त' इन दो शब्दों के मिलने से बना है। संत का मतलब है विद्या, नम्रता, शुद्ध आचरण, व्यापक दर्शन, उन्नत विचार, उदार दृष्टि, आंतरिक आत्मीयता, श्रेष्ठ साहित्य गुण और अभंग पठन, भजन, कीर्तन आदि के माध्यम से लोगों के विचारों को प्रभावित कर समाज में परिवर्तन लाने वाला व्यक्ति। मानव कल्याण, ईश्वर चिंतन और भक्ति प्रचारक को भी संत कहा गया है।

महाराष्ट्र यह संतों की भूमि है। तेरहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक महाराष्ट्र में अनेक संत कवि हुए। उनके द्वारा सरल मराठी भाषा में लिखा गया काव्य जन-मत को प्रेरित करता है। महाराष्ट्र के प्रमुख संतों में संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव, संत एकनाथ, संत तुकाराम, संत समर्थ रामदास स्वामी आदि हुए हैं। आधुनिक काल में दो प्रभावी संत हुए हैं, जिनमें राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज और संत गाडगे बाबा इनका अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। इनकी जन्मभूमि और कर्मभूमि महाराष्ट्र मानी जाती है। इन्होंने 'सर्वधर्म समभाव' इस तत्व को अपनाकर मानव कल्याण का मार्ग दिखाया है। संत गाडगे बाबा एक समाज सुधारक और घुमक्कड़ भिक्षुक थे जो महाराष्ट्र में सामाजिक प्रबोधन करने हेतु कीर्तनों का आयोजन करते थे। गाडगे बाबा के कीर्तनों के कई पक्ष है- अंधश्रद्धा निर्मूलन, अस्पृश्यता निर्मूलन, सामाजिक कुप्रथाओं का विरोध, दहेज़ प्रथा निर्मूलन, व्यसन निर्मूलन, पशुबलि प्रथा निर्मूलन, शिक्षा का महत्व आदि। गाडगे बाबा संत तुकाराम, संत नामदेव, संत ज्ञानेश्वर, संत एकनाथ इन संतों के अभंगों और कबीर के दोहें का प्रमाण देकर कीर्तन करते थे। वे अपने कीर्तन मौखिक रूप में, प्रश्नोत्तर पद्धति द्वारा करते थे।

'कीर्तन' यह महाराष्ट्र की एक विशेष लोककला का प्रकार है। इसी प्रकार एक मौखिक संवाद माध्यम भी है। ईश्वर का जप करना एवं स्तुति स्त्रोत गान यह कीर्तन का सामान्य अर्थ है| महाराष्ट्र के वारकरी पंथ ने इस कीर्तन भक्ति को प्रोत्साहन देकर ईश्वर भक्ति और उनका स्तुतिगान करने के लिए किया परंतु संत गाडगे बाबा ने कीर्तनों का उपयोग समाज जागृति, समाज प्रबोधन और लोक शिक्षा के लिए किया था। लोकजागरण के लिए संत गाडगे बाबा ने बहुजन समाज को जागृत करने के लिए कीर्तन इस माध्यम का उपयोग किया। इनके कीर्तनों में कई तरह की वैशिष्ट्यपूर्ण बातें समाविष्ट थी। समाज में लोगों को सरल एवं सहजता से नीति विचार समझाकर देने का कार्य गाडगे बाबा ने कीर्तन इस

माध्यम से किया। संत गाडगे बाबा यह एक भिक्षुक थे जो गाँव-गाँव जाकर मंदिरों और गाँव के जलसों में रात्रि के समय कीर्तन करते थे।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध के माध्यम से कीर्तनों का अनुवाद करते हुए उस समय के संदर्भो से जोड़ते हुए उस समय समाज की स्थितियों, परिस्थितियों का आकलन करते हुए समाजभाषापरक अध्ययन किया गया है। जिस प्रकार कबीर बाह्य पाखंडों का विरोध करते हुए निर्गुण की आराधना का महत्व प्रस्तुत करते हैं उसी प्रकार संत गाडगे बाबा ने भी अपने कीर्तनों के माध्यम से इस तथ्य को स्पष्ट किया है। इस तरह से प्रस्तुत लघु शोध का संत गाडगे बाबा के कीर्तनों की सभी विशेषताओं से लोगों को परिचित कराने का उद्देश्य है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के लिए संत गाडगे बाबा के कीर्तनों का मराठी पुस्तकों के आधार पर कीर्तनों का संकलन किया गया तथा इनका हिंदी भाषा में अनुवाद किया गया है। गाडगे बाबा के कीर्तनों में प्रस्तुत सभी विषयों का विवरण प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में दिया गया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को चार अध्यायों में बांटा गया है

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में प्रथम अध्याय संत परंपरा का संक्षिप्त परिचय इसके अंतर्गत पाँच उप-अध्याय दिए गए हैं। जिसमें संत का अर्थ, परिभाषा एवं उसके स्वरुप का वर्णन किया गया है। महाराष्ट्र के प्रमुख संत उनकी कीर्तन परंपरा का परिचय भी दिया गया है। इन संतों में आधुनिक संत गाडगे बाबा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है। तथा संत गाडगे बाबा के कीर्तनों का अर्थ, स्वरुप एवं प्रकार दर्शाते हुए गाडगे बाबा की कीर्तन पद्धति का परिचय भी दिया गया है।

द्वितीय अध्याय में संत गाडगे बाबा के कीर्तनों के विषयों का परिचय देते हुए उसे दो उप-अध्याय में विभाजित किया गया है। प्रथम उप-अध्याय में उनके कीर्तनों का हिंदी भाषा में अनुवाद किया गया। जिनमें अंधश्रद्धा निर्मूलन इस विषय के अंतर्गत दैववाद, मन्नत, पशुबलि प्रथा का विरोध आदि विषयों पर आधारित संत गाडगे बाबा के कीर्तनों का यथासंभव अनुवाद कार्य करने का प्रयास किया गया हैं। तथा इसी अध्याय में शिक्षा के महत्व को स्पष्ट किया गया है और इन सभी विषयों पर आधारित विस्तृत रूप से चर्चा भी की गई है।

तृतीय अध्याय संत गाडगे बाबा के कीर्तनों की भाषा-शैली के अंतर्गत इस अध्याय में चार उप-अध्याय दिए गए हैं। इसमे संत गाडगे बाबा के कीर्तनों की भाषा मराठी(वरहाडी) पर आधारित थी। वह जनभाषा में अपने कीर्तन करते थे। उनके कीर्तन की भाषा और कीर्तनों की शैली का उदाहरणों द्वारा परिचय दिया गया है। तथा यह भी जानने की कोशिश की गई है कि संत गाडगे बाबा अपनी बात सामान्य जनता के सामने रखने के लिए कीर्तनों में दृष्टांत देकर जनसामान्य को अपने विचार समझाते थे। तथा लोगों का मनोरंजन करते हुए कीर्तनों में संत वचनों का प्रमाण देकर अपने विचारों को समझाते थे।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत संत गाडगे बाबा के कीर्तनों का समाजभाषिक पक्ष का परिचय दिया गया है। इस अध्याय में तीन उप-अध्याय दिए गए हैं। इनमें संत गाडगे बाबा की सामाजिक पृष्ठभूमि और संत गाडगे बाबा के भक्तों की सामाजिक पृष्ठभूमि का परिचय दिया गया है। तथा संत गाडगे बाबा के कीर्तनों के सामाजिक पक्ष में अस्पृश्यता निर्मूलन, व्यसन निर्मूलन, दहेज़ प्रथा निर्मूलन, स्वच्छता संबंधी संदेश, लोकशिक्षा आदि सामाजिक पक्ष का भी परिचय दिया गया है।

अंत में उपसंहार दिया गया है। परिशिष्ट के अंतर्गत संत गाडगे बाबा के जीवन से संबंधित कुछ चित्र दर्शाए गए है, संत गाडगे बाबा के पूर्वज(वंश परंपरा) एवं बाबा के अनुयायी-कीर्तनकारों की सूची आदि दी गई है। अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी गई है।

शोध की केंद्रीय समस्या एवं उद्देश्य :

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध का शीर्षक 'संत गाडगे बाबा के चयनित कीर्तनों का हिंदी अनुवाद : समाजभाषापरक अध्ययन' है। जिसके अंतर्गत महाराष्ट्र के आधुनिक संत गाडगे बाबा के कीर्तनों का मराठी(वरहाडी) भाषा से हिंदी भाषा में अनुवाद करते समय भाषा की समस्या इस लघु शोध प्रबंध की मुख्य केंद्रीय समस्या है।

इस शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य संत गाडगे बाबा के कीर्तनों को हिंदी अनुवाद के माध्यम से हिंदी भाषा में उपलब्ध कराना। तथा इस अनुवाद के माध्यम से अनुवाद ज्ञानानुशासन को समृद्ध किया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त

अनुवाद अनुशासन को समाजभाषा विज्ञान के क्षेत्र से जोड़कर संत गाडगे बाबा के कीर्तनों को लोगों से परिचित करवाना।

सामग्री का संकलन :

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सामग्री का संकलन मुख्यतः पुस्तकालयों में उपलब्ध ग्रंथ, वेबसाइट, पुस्तकें आदि।

साहित्यपुनरावलोकन :

प्रस्तुत लघु शोध विषय से संबंधित शोध कार्य अनुवाद अनुशासन में अब तक नहीं किया गया है। किसी लघु शोध उपाधि के लिए यह प्रथम कार्य होगा। मराठी के अन्य संत कवि ज्ञानेश्वर, संत एकनाथ, संत तुकाराम आदि संतों पर हिंदी विषय में शोध कार्य हुआ है लेकिन संत गाडगे बाबा के संदर्भ में अनुवाद अनुशासन में संभवतः ऐसा विश्वास किया जा सकता है कि यह प्रथम ही लघु शोध कार्य हुआ है।

संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय में पीएच. डी. उपाधि हेतु पी. एस. वानखडे के द्वारा मराठी विषय के अंतर्गत **'गाडगे बाबांचे जीवन व कार्य या संदर्भात प्रकाशित झालेल्या साहित्याचा चिकित्सक अभ्यास'** इस शीर्षक पर शोध कार्य किया गया है।

इस प्रकार संत गाडगे बाबा अमरावती विश्वविद्यालय में पीएच. डी. उपाधि हेतु डी. पांडे द्वारा समाजशास्त्र इस विषय के अंतर्गत **'संत गाडगे बाबाचे सामाजिक विचार'** इस शीर्षक के तहत शोध कार्य किया गया है। लेकिन अनुवाद अनुशासन में 'संत गाडगे बाबा के कीर्तनों का हिंदी अनुवाद : समाजभाषापरक अध्ययन' इस विषय पर अभी तक कोई शोध कार्य प्रकाश में नहीं आ पाया है। इन सबके अतिरिक्त शोधार्थी का यह कार्य अभिनव और मौलिक होगा। अनुवाद अनुशासन में शोधार्थी द्वारा किया गया यह प्रथम कार्य है।

प्राक्कल्पना:

श्रेष्ठ समाजसुधारक के रूप में गाडगे बाबा संपूर्ण महाराष्ट्र में जाने जाते है। गाडगे बाबा के कीर्तनों द्वारा समाज में जनजागृति हुई है। इस परिवर्तनशील समय में हिंदी भाषी लोगों तक गाडगे बाबा के कीर्तनों को हिंदी अनुवाद द्वारा सामने लाना। ताकि वही जागरूकता वर्तमान समय में देखी जा सकें।

शोध की सीमाएँ :

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के कार्य के अंतर्गत संत गाडगे बाबा के कीर्तनों का पुस्तकों से संकलन किया गया। इन कीर्तनों का हिंदी भाषा में अनुवाद करने का प्रयास किया गया है। इन कीर्तनों में अंतर्निहित विषयों को प्रस्तुत किया गया। संत गाडगे बाबा के कीर्तनों के आधारपर समाजभाषापरक अध्ययन किया गया।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध कार्य के अंतर्गत व्याख्यात्मक प्रविधि के साथ-साथ विश्लेषणात्मक प्रविधि का आधार लिया गया है जिससे कीर्तनों में निहित दार्शनिक, धार्मिक अन्य संदर्भों को रेखांकित किया जा सके। इसके साथ ही कीर्तनों में आए कठिन शब्दों का विश्लेषण किया गया है। इसके साथ-साथ तुलनात्मक, गुणात्मक तथा मात्रात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

संभावनाएँ एवं उपयोगिता:

संत गाडगे बाबा के कीर्तन अधिकतर मराठी भाषा में लिखित है। इन कीर्तनों का हिंदी भाषा में अनुवाद करना महत्वपूर्ण कार्य होगा क्योंकि हिंदी भाषिकों के लिए संत गाडगे बाबा के कीर्तन उपलब्ध नहीं है।

प्रस्तावित लघु शोध विषय से बहुभाषी भारतीय समाज में संत गाडगे बाबा के कीर्तनों का विकास अनुवाद अनुशासन को मराठी साहित्य में विस्तार पाने का अवसर प्राप्त होगा। यह शोध बहुभाषी भारतीय समाज के लिए मराठी संत गाडगे बाबा के कीर्तनों का विकास और विस्तार के लिए सहायता करेगा। इस शोध के माध्यम से तत्कालिक सामाजिक स्थिति, कीर्तनों के प्रमुख तथ्य और कीर्तनों में प्रयुक्त शब्दावली का परिचय दिया जाएगा। इस

विषय पर ऐतिहासिक और साहित्यिक दृष्टि से काम हुआ है परंतु अनुवाद के क्षेत्र में इस विषय पर काम करना एक बड़ी उपलब्धि होगी।

उपसंहार

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध 'संत गाडगे बाबा के चयनित कीर्तनों का हिंदी अनुवाद : समाजभाषापरक अध्ययन' विषय पर कार्य किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध कार्य के माध्यम से हिंदी भाषी लोग संत गाडगे बाबा और उनके कीर्तन किस प्रकार थे?, उक्त कीर्तन इस माध्यम से समाज को क्या संदेश देना चाहते थे? यह आसानी से समझ सकेंगे। इन कीर्तनों का कहीं कहीं पर भावानुवाद करने का प्रयास किया गया है तो कहीं शब्दानुवाद की विधि का उपयोग किया गया है। संत गाडगे बाबा के चयनित कीर्तनों में प्रयुक्त सभी विषयों पर आधारित उदाहरण देकर कीर्तनों का हिंदी भाषा में अनुवाद किया गया। गद्यानुवाद की अपेक्षा पद्यानुवाद कठिन होता है। संत गाडगे बाबा के कीर्तन इस माध्यम से परिवर्तनवादी, विज्ञानवादी विचार समाज तक सफलतापूर्वक पहुँचाया गया है। बाबा ने अपनी प्रखर विज्ञानवादी दृष्टिकोण की सहायता से समाज में चिकित्सक वृत्ति निर्माण करने के लिए कीर्तन इस माध्यम से लोगों के विचारों को गतिमान करनेवाली एक प्रकार से निवेदन पद्धति का उपयोग किया है। इस परिस्थिति को ध्यान में रखकर अनुवाद कार्य पूर्ण करने का प्रयास किया गया है। अनुवाद अनुशासन में इस शोध विषय पर आगे भी शोध कार्य किया जा सकता है। और संत गाडगे बाबा का कीर्तन-साहित्य का अनुवाद भी किया जा सकता है। संत गाडगे बाबा मराठी (वरहाडी भाषा) में कीर्तन करते थे। आज के समय में वरहाडी भाषा का धीरे-धीरे ह्रास होता जा रहा है। यह शोध कार्य वरहाडी भाषा को समृद्ध और संरक्षित करने के लिए लोगों को प्रेरित करेगा। इसके साथ-साथ यह लघु शोध प्रबंध महाराष्ट्र की ग्रामीण संस्कृति से परिचित करवाएगा।

संत गाडगे बाबा इनके कीर्तनों के विषयों की रचना तर्क के आधार पर सही साबित होती है। अंधश्रद्धा निर्मूलन इस विषय पर 'मन्नत माँगने से कन्या-पुत्र कैसे प्राप्त हो सकते हैं? इस प्रकार कीर्तन द्वारा बाबा ने अंधश्रद्धा निर्मूलन पर अपने विचार व्यक्त किए है। आज अंधश्रद्धा निर्मूलन का कार्य शासकीय स्तर पर जिस प्रकार चल रहा है, उसकी शुरुवात मानो गाडगे बाबा ने कीर्तनों से बहुत पहले ही की थी। ऐसा कहा जाना तो गलत नहीं होगा।

संत गाडगे बाबा इन्होंने कीर्तनों का उपयोग लोकशिक्षा के लिए किया। बाबा शिक्षा का महत्व जान गए थे। शिक्षा से वंचित होने के कारण समाज परंपरा की अनिष्ट रुढ़ियों में पीस रहा है। उसे शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है। यह जानकर गाडगे बाबा लोकशिक्षा के विचार अपने कीर्तनों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। और अनौपचारिक शिक्षा

में 'नशा मत करो, जातिभेद मत करो, पशु हत्या मत करो, पाखंड का विरोध करो, जरूरतमंद लोगों को मदद करो' यह लोकशिक्षा का कार्य बाबा के कीर्तन द्वारा सफ़ल हुआ है।

आज महाराष्ट्र और विशेषत: विदर्भ में संत गाडगे बाबा ने अपने कीर्तन के माध्यम से गाँव में जो परिवर्तनवादी विचार सरल, सहज, सुगम भाषा से जनसामान्य को समझ में आए ऐसे दृष्टांतों का उचित जगह प्रयोग किया है। इसका प्रमाण उनके कीर्तनों द्वारा मिलता है।

संत गाडगे बाबा के कीर्तनों का परिणाम आज महाराष्ट्र में अनेक जगहों में देखा जाता है। जैसे -पशुबलि प्रथा पर बंदी की गई है। अशिक्षित परिवारों ने भी अपने बच्चों को उच्चशिक्षा के लिए शहरों में भेजना शुरू कर दिया है यह देखा जा रहा है। व्यसन मुक्ति का आंदोलन छोटे-छोटे गाँवों तक पहुँच चुका है। समाज में प्रचलित कुप्रथाओं का लोगों ने त्याग कर दिया है। यह पाया जाता है कि इस तरह से सर्वसामान्य जनता आज तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि को स्वीकार करने के लिए प्रयत्नशील हो रही है।

यह स्पष्ट होता है कि संत गाडगे बाबा कीर्तनों के माध्यम से अपने परिवर्तनशील विचारों के प्रचार के लिए परिवर्तनशील संवाद साध्य करने में पूर्णत: सफ़ल हुए है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

❖ आधार सामग्री :

संत गाडगे बाबा के चयनित कीर्तन (प्रकाशित सामग्री)

मराठी ग्रंथ :

- सोनोने, मनोज. (2013). जनसंवादक: संत गाडगेबाबा. नागपुर : डॉ. बाबासाहब अंबेडकर प्रतिष्ठान, नागपुर.
- पोतदार, वसंत. (1998). गाडगे बाबा. मुंबई : अक्षर प्रकाशन.
- केचे, मधुकर. (1979). श्री संत गाडगे महाराज. मुंबई : महाराष्ट्र राज्य शिक्षण विभाग मंत्रालय.
- पापळकर, लक्ष्मण(गुरूजी). (2000). संत गाडगेबाबा जीवन आणि कार्य. नागपुर : रुचा प्रकाशन.
- ठाकरे, के. सी. (2013). संत गाडगे बाबा. नागपुर : प्रबुद्धभारत पुस्तकालय आणि प्रकाशन व्यवसाय.
- राठी, जुगलकिशोर. (2016). संत गाडगे बाबा च्या सहवासात. नागपुर : नचिकेत प्रकाशन.
- शेंडे, ना. रा. (2005). संत गाडगेबाबा. नागपुर : निलांजलि प्रकाशन.
- शेजुळे, प्रा. भीमराव. (2007). संतश्रेष्ठ व युगप्रवर्तकांचे चरित्र. वर्धा : सुधीर प्रकाशन.
- कडवे, प्रा. रघुनाथ. (2012). वैराग्यमूर्ती गाडगेबाबा (जीवन व कार्य). नागपुर: अमोल प्रकाशन.
- स्वामी, व्ही. एन. (2015). महाराष्ट्रातील समाजसुधारक, संत, साहित्यिक आणि थोर भारतीय विचारवंत. लातूर : विद्याभारती प्रकाशन.
- शर्मा, डॉ. शिवकुमार. (बीसवाँ संस्करण : 2012). हिंदी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ. दिल्ली : अशोक प्रकाशन.
- वंशी, बलदेव. (2009). संत गाडगे बाबा. दिल्ली : आलेख प्रकाशन.